नवरात्रि
भक्ति और उत्साह का महापर्व

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 11 - 17 October 2026

पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती
देवभक्ती के
मोहक सुगंध से करें,
देवी का पवित्र पूजन!
Agarbatti with
Natural Ingredients
कुलदेवी उपासना
लक्ष्मी
सरस्वती
पार्वती
मसाला अगरबत्ती
अनुभव करें भक्ति की शक्ति!
चंदन
गुलाब
मोगरा
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 67035564/5699, Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

◆ विविध रंगों में सजी भारत की सांस्कृतिक एकता	निहारिका पोल सर्वटे	04
◆ परिवार की आस्था से सामूहिक संस्कृति तक	लवकुश तिवारी	06
◆ नवरात्र में फ्यूजन म्यूजिक का बढ़ता ट्रेंड	डॉ. राकेश भट्ट	08
◆ रोगों से बचाव का उत्तम साधन है उपवास	डॉ. देवाराम काकड़	11
◆ फैशन के ये नौ दिन	दिव्या द्विवेदी	13
◆ नाना का दिवाना	अतुल गंगवार	15
◆ स्मित मच्छार के साहस पर कैसी चुप्पी!	डॉ. संतोष झा	18
◆ जीआई टैग: कृषि विरासत का वैश्विक शंखनाद	रितेश कश्यप	20
◆ हाइब्रिड युद्ध की चुनौती	रंजीत कुमार	22
◆ एक कचौरी दो समोसा में उलझा भरोसा	मुकेश जोशी	25
◆ शानदार प्रदर्शन और नए कीर्तिमान	अपर्णा झा	26
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	–	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

भिन्नता

निहारिका पोल सर्वटे

भारत की विविधता केवल भौगोलिक या भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी है। एक ही देवी की आराधना कहीं नृत्य बन जाती है, कहीं लोकगीत, कहीं नाटक, कहीं भव्य पूजा और कहीं गुड़ियों की कलात्मक सजावट।

विविध रंगों में सजी भारत की सांस्कृतिक एकता

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी विविधता में निहित है। यहां एक ही पर्व अलग-अलग राज्यों, भाषाओं और समुदायों में अलग-अलग परम्पराओं, मान्यताओं और उत्सवों के साथ मनाया जाता है। नवरात्र इसका सबसे सुंदर उदाहरण है। शक्ति की आराधना का यह पर्व देश के अलग-अलग हिस्सों में अपने विशिष्ट रंग और रूप के साथ दिखाई देता है। कहीं गरबा और डांडिया की धुन गूंजती है, तो कहीं दुर्गापूजा के भव्य पंडाल सजते हैं। कहीं रामलीला के माध्यम से भगवान राम की कथा जीवंत होती है, तो कहीं गुड़ियों की सुंदर सजावट के साथ गोलू की परम्परा निभाई जाती है।

गुजरात का गरबा और डांडिया

गुजरात में नवरात्र का सबसे लोकप्रिय स्वरूप गरबा और डांडिया है। रात होते ही शहरों और गांवों के मैदान रोशनी से जगमगा उठते हैं और पारम्परिक परिधानों में सजे लोग देवी की आराधना करते हुए गरबा करते हैं। गरबा में दीप या गरबा को शक्ति और जीवन के प्रतीक के रूप में केंद्र में रखा जाता है।

डांडिया रास में महिला और पुरुष रंग-बिरंगे परिधानों में लकड़ी की डांडियों के साथ तालबद्ध नृत्य करते हैं। आज गुजरात का गरबा देश ही नहीं, दुनिया के कई हिस्सों में भारतीय संस्कृति की पहचान बन चुका है।

महाराष्ट्र का भोंडला

महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान भोंडला एक महत्वपूर्ण लोकपरम्परा है। यह विशेष रूप से महिलाओं और बालिकाओं से जुड़ा उत्सव है। आंगन में हाथी की आकृति बनाकर उसके चारों ओर पारम्परिक गीत गाते हुए महिलाएं और लड़कियां

भोंडला खेलती हैं।

भोंडला के लोकगीतों में हास्य, सामाजिक अनुभव और स्त्री जीवन की झलक दिखाई देती है। यह परम्परा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि पीढ़ियों को जोड़ने वाला सांस्कृतिक माध्यम भी है। बदलते समय के बावजूद महाराष्ट्र के कई परिवारों में आज भी भोंडला की परम्परा उत्साह से निभाई जाती है।

बंगाल की दुर्गापूजा और सिंदूर खेला

पश्चिम बंगाल में नवरात्र का केंद्र मां दुर्गा की भव्य आराधना है। दुर्गापूजा के दौरान विशाल पंडाल, आकर्षक प्रतिमाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामुदायिक आयोजन पूरे प्रदेश को उत्सव के रंग में रंग देते हैं।

विजयादशमी पर सिंदूर खेला की परम्परा विशेष आकर्षण का केंद्र होती है। विवाहित महिलाएं एक-दूसरे को सिंदूर लगाकर मां दुर्गा को विदाई देती हैं। यह परम्परा सुख, समृद्धि और वैवाहिक मंगल की कामना से जुड़ी है। विसर्जन के दौरान उमड़ता जनसैलाब इस पर्व की सामुदायिक भावना को दर्शाता है।

उत्तर भारत की रामलीला

उत्तर भारत में नवरात्र और दशहरा रामलीला की परम्परा से गहराई से जुड़े हैं। नवरात्र के 9 दिनों में भगवान राम के जीवन और रावण के साथ उनके संघर्ष की कथा का मंचन किया जाता है। अलग-अलग शहरों में रामलीला के अपने स्थानीय स्वरूप हैं।

दशहरे के दिन रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों का दहन बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक बनता है। रामलीला केवल धार्मिक कथा का मंचन नहीं, बल्कि लोकनाट्य की समृद्ध परम्परा है, जिसने पीढ़ियों से भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक कथाओं को जीवित रखा है।

राजस्थान की लोक संस्कृति

राजस्थान में नवरात्र शक्ति उपासना के साथ अपनी समृद्ध लोक संस्कृति के रंग भी बिखेरता है। देवी मंदिरों में विशेष पूजा, जागरण और धार्मिक आयोजन होते हैं। कई शहरों और कस्बों में नवरात्र के दौरान गरबा, डांडिया और विभिन्न लोक-सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

रंग-बिरंगे पारम्परिक परिधान, लोकगीत और सामूहिक नृत्य उत्सव को राजस्थानी संस्कृति से जोड़ते हैं। राजस्थान का प्रसिद्ध लोकनृत्य घूमर भी विभिन्न सांस्कृतिक अवसरों पर अपनी सुंदर प्रस्तुति के माध्यम से उत्सव का आकर्षण बढ़ाता है। इस तरह यहां नवरात्र भक्ति के साथ राजस्थान की जीवंत लोक परम्पराओं को भी सामने लाता है।

मध्य प्रदेश की देवी आराधना

मध्य प्रदेश में नवरात्र धार्मिक आस्था और लोक संस्कृति का सुंदर मेल प्रस्तुत करता है। जबलपुर, भोपाल, रीवा सहित प्रदेश के कई शहरों में नवरात्र के दौरान देवी की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं। जगह-जगह आकर्षक पंडाल सजाए जाते हैं और देवी के विभिन्न स्वरूपों की भव्य झांकियां लगाई जाती हैं।

दक्षिण भारत का गोलू

दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में नवरात्र के दौरान गोलू या बोम्मई गोलू की परम्परा देखने को मिलती है। घरों में सीढ़ीनुमा मंच तैयार कर देवी-देवताओं, पौराणिक पात्रों, खिलौनों और सामाजिक जीवन को दर्शाती गुड़ियों की सजावट की जाती है। महिलाएं एक-दूसरे के घर गोलू देखने जाती हैं, भक्ति गीत गाती हैं और प्रसाद का आदान-प्रदान करती हैं। चेन्नई जैसे शहरों में यह परम्परा विशेष सांस्कृतिक पहचान रखती है।

गरबा की ताल से लेकर भोंडला के लोकगीतों तक, दुर्गापूजा के ढाक से लेकर रामलीला के संवादों तक, राजस्थान के लोक रंगों से लेकर मध्य प्रदेश की देवी आराधना और दक्षिण भारत के गोलू तक, नवरात्र भारत की सांस्कृतिक आत्मा को एक साथ सामने लाता है। ●●●

लवकुश तिवारी

नवरात्र

नवरात्र जिसे 9 दिनों का अनुष्ठान कहा जाता है। इस दौरान शक्ति की भक्ति की जाती है। 9 रातों का पर्व, जिसमें भक्ति, शक्ति, परिवार और लोकसंस्कृति एक साथ दिखाई देती है। यह पर्व पारिवारिक आस्था से सामूहिक संस्कृति तक जुड़ा है।

परिवार की आस्था से सामूहिक संस्कृति तक

भारत में नवरात्र केवल देवी-पूजा का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय समाज की पारिवारिक स्मृतियों, लोकपरम्पराओं और सामूहिक सांस्कृतिक चेतना का जीवंत उत्सव है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में इसके रूप भले ही अलग हों, लेकिन इसके केंद्र में शक्ति, श्रद्धा और अच्छाई की बुराई पर विजय का भाव समान रूप से दिखाई देता है। शारदीय नवरात्र आश्विन मास में मनाई जाने वाली सबसे प्रमुख नवरात्र मानी जाती है।

पारम्परिक या पारिवारिक नवरात्र क्या है

नवरात्र का सबसे पुराना और आत्मीय रूप परिवार के भीतर दिखाई देता है। घर में घट या कलश की स्थापना, अखंड ज्योति, देवी की पूजा, व्रत, कन्या पूजन और परिवार के सदस्यों द्वारा मिलकर आराधना-ये सभी पारिवारिक नवरात्र की प्रमुख विशेषताएं हैं। कई पारम्परिक परिवारों में घट को शक्ति और सृजन का प्रतीक माना जाता है। उसके चारों ओर महिलाएं गोल घेरा बनाकर पारम्परिक गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं। गुजरात और पश्चिम भारत की गरबा परम्परा में भी दीप या घट के चारों ओर वृत्ताकार नृत्य इसी सांस्कृतिक प्रतीकवाद से जुड़ा दिखाई देता है। यहां 'गरबा' शब्द का सम्बंध गर्भ या जीवन के स्रोत के प्रतीक से भी जोड़ा जाता है। पारिवारिक नवरात्र का मूल उद्देश्य प्रदर्शन नहीं, बल्कि परिवार के भीतर आस्था और पीढ़ियों के बीच परम्परा का हस्तांतरण है। दादी-नानी से सीखे गए देवी गीत, पूजा की विधियां, व्रत की परम्पराएं और परिवार की अपनी मान्यताएं बच्चों तक इसी अवसर पर पहुंचती हैं। इसलिए इसे केवल धार्मिक अनुष्ठान कहना पर्याप्त नहीं होगा, यह परिवार की सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखने की प्रक्रिया भी है।

सामूहिक नवरात्र : जब परिवार से समाज तक पहुंचती है आस्था

समय के साथ नवरात्र घर की चारदीवारी से निकलकर

मोहल्लों, गांवों, शहरों और बड़े सार्वजनिक मैदानों तक पहुंची। यही सामूहिक नवरात्र है। इसमें विभिन्न परिवार एक स्थान पर एकत्र होकर देवी की स्थापना, आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन, गरबा, डांडिया और अन्य लोककलाओं के माध्यम से उत्सव मनाते हैं। सामूहिक नवरात्र का सबसे बड़ा गुण है-साझी भागीदारी। यहां रिश्तेदारी से आगे बढ़कर पड़ोसी, मित्र और समुदाय के विभिन्न वर्ग एक साथ आते हैं। आधुनिक शहरों में सामूहिक नवरात्र सामाजिक मेल-मिलाप, सांस्कृतिक प्रस्तुति और स्थानीय सामुदायिक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है।

पौराणिक आधार : महिषासुर पर शक्ति की विजय

नवरात्र की सबसे व्यापक पौराणिक मान्यता देवी दुर्गा और महिषासुर के युद्ध से जुड़ी है। कथा के अनुसार महिषासुर को ऐसा वर प्राप्त था जिसके कारण देवता और पुरुष उसे पराजित नहीं कर सकते थे। तब देवताओं की सामूहिक शक्ति से आदिशक्ति का प्राकट्य हुआ। देवी दुर्गा ने महिषासुर से नौ रातों तक युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया। इसी कारण 9 रातें नवरात्र और दसवां दिन विजयदशमी कहलाया। नवरात्र से रामायण की परम्परा भी जुड़ी है। उत्तर भारतीय मान्यताओं में विजयदशमी भगवान राम की रावण पर विजय का प्रतीक है। इस प्रकार एक ही पर्व में देवी शक्ति और राम की धर्म-विजय की दो महत्वपूर्ण पौराणिक धाराएं मिलती हैं।

बदलते समय में नवरात्र का अर्थ

आज नवरात्र घर की पूजा से लेकर विशाल सार्वजनिक आयोजनों तक विस्तृत हो चुका है। लेकिन दोनों रूपों का मूल भाव एक ही है-शक्ति की आराधना, परिवार का जुड़ाव और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार। पारिवारिक नवरात्र जहां व्यक्ति को अपनी जड़ों और पारिवारिक परंपराओं से जोड़ता है, वहीं सामूहिक नवरात्र विभिन्न परिवारों और समुदायों को एक साझा सांस्कृतिक मंच देता है। गुजरात का गरबा, बंगाल की दुर्गापूजा, उत्तर भारत की रामलीला, दक्षिण भारत का कोलु, कर्नाटक का मैसूर दशहरा और तेलंगाना का बथुकम्मा-ये सभी अलग-अलग रूप होते हुए भी भारत की उस सांस्कृतिक विशेषता को प्रमाणित करते हैं, जिसमें एक ही आध्यात्मिक भावना अनेक स्थानीय भाषाओं, कलाओं और परंपराओं में अभिव्यक्त होती है। यही नवरात्र की वास्तविक शक्ति है-यह केवल नौ रातों का पर्व नहीं, बल्कि भारत की विविधता में एकता का नौ रातों तक दिखाई देने वाला जीवंत उत्सव है।

●●●

संगीत

डॉ. राकेश भट्ट

नवरात्र भारतीय सांस्कृतिक चेतना का ऐसा पर्व है, जिसमें आध्यात्मिकता, लोकपरम्परा, संगीत, नृत्य और सामूहिक उत्सव एक साथ दिखाई देते हैं। इन पारम्परिक प्रस्तुतियों में फ्यूज़न म्यूज़िक का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

नवरात्र में फ्यूजन म्यूजिक का बढ़ता ट्रेंड

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

प्रायः देवी पूजन में उच्चारित किए जाने वाले इस मंत्र का अर्थ है कि जो देवी समस्त प्राणियों में शक्ति के रूप में विराजमान हैं, उन मां जगदम्बा को बारम्बार नमन है।

देवी की आराधना के इन 9 दिनों में भारत के अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट संगीत परम्पराएं हैं। कहीं गरबा और डांडिया की धुनें हैं, कहीं देवी जागरण और भजन हैं, तो कहीं लोकगीतों और पारम्परिक वाद्यों के माध्यम से शक्ति की उपासना की जाती है। सदियों से आ रही इन परम्पराओं के आश्चर्यजनक बदलाव अधिकांश हमें अब विचलित करने लगे हैं। बदलते समय के साथ अब इन पारम्परिक प्रस्तुतियों में जिस तरह से फ्यूजन म्यूजिक का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है वह हमारी अपसंस्कृति के अंधानुकरण की एक बानगी है। फ्यूजन का सामान्य अर्थ अलग-अलग संगीत परम्पराओं, वाद्ययंत्रों, गायन शैलियों अथवा संगीत तकनीकों का रचनात्मक मेल है।

नवरात्र के संदर्भ में यह मेल भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत के साथ आधुनिक वाद्ययंत्रों, इलेक्ट्रॉनिक बीट्स, रॉक, जैज, पॉप और विश्व संगीत की ध्वनियों के रूप में सामने आ रहा है। आज के युवा श्रोता पारम्परिक देवी गीत को गिटार, की-बोर्ड, ड्रम्स, इलेक्ट्रॉनिक बीट्स और आधुनिक रिकॉर्डिंग तकनीक के साथ सुनना पसंद करते हैं।

यह परिवर्तन केवल मनोरंजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसके पीछे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव भी काम कर रहे हैं। यद्यपि डिजिटल माध्यमों ने संगीत की पहुंच को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है। सोशल मीडिया, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और विभिन्न संगीत मंचों के कारण कलाकार अपनी प्रस्तुतियों को स्थानीय मंच से निकालकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं तक पहुंचा सकते हैं। ऐसे में लोकधुनों और पारम्परिक देवी गीतों को आधुनिक संगीत संयोजन के साथ प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इस प्रवृत्ति में संगीत और भाष्य का जो माधुर्य था वो सिरे से गायब है। विशेष रूप से नवरात्र के दौरान आयोजित होने वाले गरबा, डांडिया और देवी जागरण कार्यक्रमों में फ्यूजन संगीत ने एक नया आकर्षण तो पैदा किया है।किंतु परोग का आधिक्य है। पारम्परिक गरबा की ताल के साथ इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक का संयोजन युवाओं को आकर्षित करता है। इसी तरह देवी स्तुति में शास्त्रीय गायन के साथ पश्चिमी वाद्ययंत्रों का प्रयोग प्रस्तुति को एक नया स्वरूप देता है।

लेकिन यहां यह समझना आवश्यक है कि फ्यूजन केवल पुराने संगीत को आधुनिक बीट्स के साथ जोड़ देने का नाम नहीं है। वास्तविक फ्यूजन तभी सार्थक होता है जब कलाकार दोनों संगीत परम्पराओं की प्रकृति, भाषा, लय, भाव और सांस्कृतिक संदर्भ को समझकर उनका संतुलित संयोजन करे। अन्यथा वह केवल ध्वनियों का मिश्रण बनकर रह जाता है।

भारत की लोक परम्पराओं में पहले से ही विविधता और प्रयोग की अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। उत्तराखंड के संदर्भ में देखें तो यहां देवी उपासना से जुड़े अनेक लोकगीत, जागर, मांगल, ढोल-दमाऊं, हुड़का, रणसिंघा और अन्य लोकवाद्यों की समृद्ध परम्परा है। इन लोकधुनों को आधुनिक संगीत संयोजन के साथ प्रस्तुत करने की सम्भावनाएं बहुत व्यापक हैं। यदि किसी पहाड़ी देवी गीत की मूल धुन और उसकी आत्मा को सुरक्षित रखते हुए उसमें आधुनिक वाद्य संयोजन किया जाए, तो वह नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

फ्यूजन संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह परम्परा को संग्रहालय की वस्तु बनने से बचाते हुए उसे वर्तमान पीढ़ी के अनुभव का हिस्सा बना सकता है। युवा पीढ़ी जिस भाषा और ध्वनि-संसार से परिचित है, उसी के माध्यम से यदि उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ा जाए तो परंपरा अधिक जीवंत और प्रभावशाली बन सकती है।

हालांकि इसके साथ कुछ चुनौतियां भी हैं। बाजार और लोकप्रियता की होड़ में कभी-कभी पारम्परिक गीतों के मूल भाव, शब्द और सांस्कृतिक संदर्भ कमजोर पड़ जाते हैं। देवी आराधना से जुड़े गीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं होते, उनमें लोकविश्वास, आस्था और सामुदायिक स्मृति जुड़ी होती है। इसलिए उनके आधुनिक रूपांतरण में संवेदनशीलता और सांस्कृतिक जिम्मेदारी आवश्यक है।

हमें यह भी देखना होगा कि फ्यूजन के नाम पर लोक संगीत की मौलिकता समाप्त न हो। लोककलाकारों और पारम्परिक वाद्ययंत्रों को इस प्रक्रिया में उचित स्थान मिलना चाहिए। यदि आधुनिक संगीतकार लोक कलाकारों के साथ मिलकर काम करें, उनकी धुनों और परम्पराओं को समझें तथा उन्हें रचनात्मक रूप से नए मंचों पर प्रस्तुत करें, तो यह प्रक्रिया दोनों पक्षों के लिए लाभकारी हो सकती है।

नवरात्र के अवसर पर फ्यूजन संगीत का बढ़ना इस बात का संकेत भी है कि भारतीय संस्कृति स्थिर नहीं, बल्कि निरंतर प्रवाहमान है। हमारी परम्पराएं समय के साथ नए रूप ग्रहण करती रही हैं। शास्त्रीय संगीत ने लोक से सीखा है और लोक ने भी समय-समय पर नए वाद्यों और शैलियों को अपनाया है। इसलिए आधुनिकता और परम्परा को एक-दूसरे का विरोधी मानने के बजाय उनके बीच संवाद स्थापित करना अधिक उचित होगा।

आज आवश्यकता ऐसे सार्थक सांगीतिक प्रयोगों की है, जिनमें तकनीक आधुनिक हो, प्रस्तुति आकर्षक हो, लेकिन भारतीय संगीत की आत्मा सुरक्षित रहे। नवरात्र जैसे पर्व इस प्रयोग के लिए अत्यंत उपयुक्त अवसर प्रदान करते हैं। यदि देवी स्तुति, लोकधुन, शास्त्रीय राग, क्षेत्रीय वाद्य और आधुनिक संगीत तकनीक एक संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ मिलते हैं, तो एक ऐसा नया संगीत जन्म ले सकता है जो अपनी जड़ों से जुड़ा होने के साथ-साथ वैश्विक श्रोताओं को भी आकर्षित करे।

फ्यूजन का उद्देश्य परम्परा को बदलना नहीं, बल्कि परम्परा के भीतर छिपी सम्भावनाओं को नए श्रोताओं तक पहुंचाना होना चाहिए। नवरात्र की शक्ति केवल देवी की आराधना में नहीं, बल्कि उस सामूहिक सांस्कृतिक ऊर्जा में भी है जो समाज को जोड़ती है। यदि फ्यूजन संगीत इस ऊर्जा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का माध्यम बनता है, तो उसका बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से भारतीय सांस्कृतिक जीवन के लिए एक सकारात्मक और रचनात्मक संकेत है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

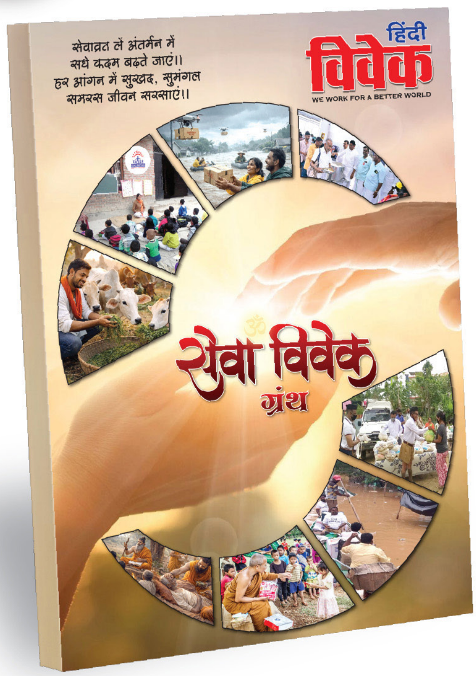

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

शुद्धिकरण

डॉ. देवाराम काकड़

रोगों से बचाव का उत्तम साधन है उपवास

प्रकृति से जुड़कर स्वास्थ्य की सिद्धि की जा सकती है। इन दिनों उपवास करने से जहां शरीर में कई तरह के बदलाव होते हैं, वहीं इसके कई स्वास्थ्य लाभ भी हैं। आइए इस पर एक दृष्टि डालें।

नवरात्र में उपवास का महत्व केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक भी है। यह ऋतु-परिवर्तन का समय होता है, जब हमारा पाचन-तंत्र कमजोर हो जाता है। इन नौ दिनों में हल्का, सात्विक और कम भोजन करके हम शरीर को नई ऋतु के अनुसार ढालते हैं। मां दुर्गा की आराधना के साथ यह उपवास हमारे शरीर, मन और आत्मा-तीनों की शुद्धि का अवसर है। यह आत्म-संयम, संकल्प-शक्ति और आंतरिक पवित्रता का प्रतीक है। लेकिन उपवास करने और उसे सही विधि से तोड़ने की कला कम लोग ही जानते हैं।

हमारे देश में आदिकाल से उपवास का बहुत अधिक महत्व रहा है। धार्मिक ग्रंथों में उपवास को शारीरिक और मानसिक पवित्रता का साधन माना गया है। यह परंपरा जैन धर्मावलंबियों में विशेष रूप से और हिंदुओं में सामान्य रूप से चली आ रही है। उपवास आध्यात्मिक और शारीरिक शुद्धि का अपूर्व उपाय है, किंतु इसका सम्पूर्ण लाभ उसी को मिलता है जो उपवास की सही विधि का ज्ञान रखता हो।

उपवास की सही विधि

उपवास प्रारम्भ करने से पहले प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से आंतों की भली-भांति सफाई कर लेनी चाहिए, अन्यथा गैस की परेशानी हो सकती है।

उपवास की अवधि में एक दिन छोड़कर एनीमा लेने से अधिक सफलता मिलती है।

प्यास लगने पर गुनगुना पानी पर्याप्त मात्रा में पीना चाहिए।

उपवास कम-से-कम 5 दिन और अधिकतम 40 दिन

तक किया जा सकता है।

थकावट, उल्टी, दस्त, पेट फूलना, जोड़ों में दर्द, चमड़ी में खुजली जैसे लक्षण सामान्य हैं। यह शरीर से विजातीय द्रव्यों के बाहर निकलने की प्रक्रिया है।

सावधानियां

उपवास के दौरान विजातीय पदार्थों को निकालने में काफी ऊर्जा खर्च होती है, इसलिए पूर्ण विश्राम और मानसिक शांति अनिवार्य है। इस नाजुक अवस्था में औषधियों के प्रयोग से बचें। खुली हवा में रहें और प्रातःकाल कुछ देर धूप का सेवन करें।

विशेष: यदि किसी बीमारी के कारण दवा चल रही हो, तो चिकित्सक के परामर्श से ही उपवास करना चाहिए।

उपवास कैसे तोड़ें

उपवास तोड़ते समय अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। पाचन-शक्ति दुर्बल होने के कारण बहुत हल्का भोजन जैसे पानी या पतला फलों का रस अल्प मात्रा में लें। दूध पूर्ण आहार होने के कारण प्रारम्भ में भारी सिद्ध होगा।

विशेष लाभ

उपवास द्वारा शराब, धूम्रपान, गांजा आदि मादक द्रव्यों की लत से आसानी से मुक्ति मिलती है, क्योंकि उपवास में विदड्रॉल सिम्पटम्स नहीं होते।

उपवास करने से शरीर में कई तरह के बदलाव के साथ-साथ कई प्रमुख स्वास्थ्य लाभ भी होते हैं।

नवरात्र ऋतु-परिवर्तन का समय होता है। इस समय किया गया उपवास शरीर को डिटॉक्स करने का सबसे प्राकृतिक तरीका है।

- **पाचन तंत्र को आराम मिलता है**
- **शरीर की सफाई होती है**
- **प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है**
- **वजन नियंत्रण और मेटाबॉलिज्म बेहतर होता है**
- **सूजन और दर्द में कमी आती है - जोड़ों का दर्द, गैस, अम्लता जैसी समस्याएं कम होती हैं।**
- **मानसिक शांति और फोकस बढ़ता है - उपवास + पूजा + ध्यान से दिमाग शांत होता है। तनाव हार्मोन कम होते हैं, नींद अच्छी आती है और एकाग्रता बढ़ती है**
- **त्वचा और बालों में निखार आता है**
- **नवरात्र में तन-मन की शुद्धि करके तथा प्रकृति से जुड़कर स्वास्थ्य की सिद्धि की जा सकती है।**

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

परिधान

दिव्या द्विवेदी

नवरात्र के आते ही युवक हों या युवतियां सब पर फैशन का बुखार चढ़ जाता है। अब पारम्परिक परिधान में भी फैशन का तड़का लग रहा है। जिसे पहनकर युवतियां इठलातीं- बलखातीं दिखाई दे रही हैं।

समय बदल रहा है, त्योहारों का स्वरूप भी बदल रहा है और उनके साथ बदल रहा है हमारा पहनावा, हमारी प्रस्तुति और उन्हें मनाने का हमारा तौर- तरीका। आज गरबा और दुर्गापूजा केवल धार्मिक आयोजन नहीं रह गए हैं। वे फैशन, फोटोग्राफी, सोशल मीडिया और लाईफस्टाइल का भी अहम हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि नवरात्र- देवी के लिए समर्पित 9 दिन हैं या फैशन के 9 दिन?

गरबा-डांडिया: आंगन से ग्लोबल फैशन स्टेज तक

कभी गुजरात के गांवों और घरों के आंगन तक सीमित गरबा आज देश ही नहीं, दुनिया के कई हिस्सों में मनाया जाने वाला सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। मिट्टी के गरबो और दीपक के चारों ओर घूमते कदम अब बड़े-बड़े इवेंट ग्राउंड्स, क्लबों और शहरों के भव्य आयोजनों तक पहुंच गए हैं और जब आयोजन बदल रहा तो पहनावा तो बदलेगा ही।

आज के समय में पारम्परिक गुजराती चनिया-चोली में अब फ्यूजन का रंग घुल सा गया है। चनिया के साथ पारम्परिक चोली की जगह क्रॉप टॉप, शर्ट, शीयर केप, एम्ब्रॉयडर्ड जैकेट और इंडो-वेस्टर्न ब्लाउज जैसे प्रयोग देखने को मिल रहे हैं। कभी भारी शीशे और जटिल कढ़ाई से सजे लहंगे गरबा की पहचान हुआ करते थे। आज उनकी जगह हल्के एक्रिलिक मिरर वर्क, कटदाना, गोटा-पट्टी और मल्टी-पैनल लहंगे, युवा लड़कियों और महिलाओं की पसंद बन गए हैं। कच्छ की पारम्परिक कढ़ाई, पोम-पोम, बोहेमियन पैटर्न और यहां तक कि लखनऊ की चिकनकारी भी गरबा फैशन का हिस्सा बन गई है।

यह बदलाव केवल महिलाओं के पहनावे तक सीमित नहीं हैं। पुरुषों के पारम्परिक धोती-कुर्ते और कुर्ता-पायजामे के साथ अब इंडो-वेस्टर्न शेरवानी, डिजाइनर जैकेट और अलग-

फैशन के ये नौ दिन

अलग प्रिंट वाले केडिया भी काफी लोकप्रिय हो रहे हैं।

आज के समय में गरबा का मैदान अब केवल नृत्य का मैदान नहीं, बल्कि अपनी पहचान और स्टाइल दिखाने का मंच भी बन गया है।

दुर्गापूजा और लाल पाड़ की बदलती कहानी

पश्चिम बंगाल की दुर्गापूजा की बात हो और लाल पाड़ यानी पारम्परिक बंगाली लाल-सफेद साड़ी की चर्चा न हो? लाल पाड़ की साड़ी बंगाली दुर्गापूजा की सांस्कृतिक पहचान रही है, लेकिन बदलते समय के साथ इस पारम्परिक पहनावे ने भी आधुनिकता का स्पर्श को स्वीकार कर लिया है।

आज साड़ी केवल पारम्परिक बंगाली ड्रेपिंग स्टाइल में ही नहीं पहनी जाती। इंडो-वेस्टर्न ड्रेपिंग, बेल्ट के साथ साड़ी, पैंट या धोती-पैंट के साथ साड़ी और अलग-अलग आधुनिक ड्रेपिंग स्टाइल महिलाओं और युवतियों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं।

इनके लोकप्रिय होने का एक व्यावहारिक कारण भी है। पंडाल हॉपिंग यानी पंडाल दर्शन के दौरान घंटों घूमना, भीड़ में चलना और अलग-अलग पंडालों तक पहुंचना पारम्परिक भारी परिधानों में मुश्किल हो जाता है, ऐसे में ये इस तरह की स्टाइलिंग फैशन के साथ कंफर्ट भी देता है।

अगर साड़ियों की प्रिंट की बात की जाए तो उसमें भी काफी प्रयोग हो रहे हैं, मां दुर्गा की आकृतियों, दुर्गापूजा के पंडालों, बंगाली लिपि और महिषासुर मर्दिनी की छवियों से सजी साड़ियां बाजार में हॉट ट्रेंड में रह रही हैं। साड़ियों के साथ ही ब्लाउज भी इस बदलाव से अछूते नहीं रहे हैं, बैलून स्लीव्स, हॉल्टर नेक, कोर्सेट स्टाइल और आधुनिक कट वाले ब्लाउज पारंपरिक साड़ी को नया रूप दे रहे हैं।

साड़ियों के फैब्रिक में सिल्क और बनारसी के साथ ऑर्गेंजा, लिनेन और कॉटन जैसे हल्के फैब्रिक्स भी महिलाओं की पहली पसंद बन रहे हैं। यानी परंपरा वही है, लेकिन उसे पहनने और प्रस्तुत करने का अंदाज बदल गया है।

गहनों से जूतों तक, फैशन का पूरा संसार

नवरात्र का ये फैशन टेंड्र केवल कपड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि गरबा नाइट में ऑक्सीडाइज्ड सिल्वर ज्वेलरी, चोकर, लंबे झुमके, कमरबंध और हाथ से बनें आभूषणों भी ट्रेंड में इन है और जिन्हें हर आयुवर्ग के लोग पसंद भी कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ पारंपरिक गहनों में भी अब हल्के और आरामदायक विकल्प तलाशे जा रहे हैं।

अब आती है बारी फुटवियर्स की...

फैशन तभी बेहतरीन लगता है जब वो आरामदायक भी हो, ऐसे में घंटों गरबा करने के लिए ऊंची हील्स की जगह फ्लैट जूतियां, मोजड़ी, कोल्हापुरी चप्पल और आरामदायक फुटवियर युवाओं की पहली पसंद बन रहे हैं। यहां तक कि पारंपरिक परिधानों के साथ स्नीकर्स पहनने का चलन भी बहुत जोरों में हैं।

फैशन के साथ बजट फ्रेंडली हो त्योहार।

आज के समय में रिसाइकल्ड फैब्रिक्स और टिकाऊ फैशन की ओर युवाओं के साथ हर आयुवर्ग के लोगों की रुचि बढ़ रही है। रेंटल फैशन भी इसी बदलाव का अहम हिस्सा बन गए हैं। लोग हर दिन अलग लुक के लिए कपड़े और ज्वेलरी खरीदने के बजाय उन्हें किराए पर लेना पसंद कर रहे हैं। जिससे न सिर्फ फालतू होने वाले खर्चे से बचाव होता है बल्कि लोगों पर आर्थिक दबाव भी कम पड़ता है।

●●●

अतुल गंगवार

श्रद्धांजलि

नाना का दिवाना

नाना पाटेकर का यूं चले जाना भारतीय सिनेमा के लिए अपूर्णीय क्षति है। ये सिनेमा की दुनिया है किसी के जाने से ठहरती तो नहीं, लेकिन एक कमी जो नाना की तरह के विलक्षण कलाकार के जाने से होती है वो कभी पूरी भी नहीं होती है। नाना आप सदैव अपने प्रशंसकों के दिलों में रहेंगे।

नाना आपका जाना खल गया। कभी सोचा भी नहीं था कि एक सुबह इस खबर के साथ आँख खुलेगी, 'नाना नहीं रहे'। आपका और हमारा रिश्ता एक अभिनेता और उसके असंख्य चाहने वालों ही जैसा था। आपके द्वारा निभाए गए कई किरदारों ने आपके प्रशंसकों के दिलों की तरह हमारे दिलों को छू लिया था। वही किरदार आज आपके ना रहने पर भी हमेशा रहेंगे और आने वाली पीढ़ियों को भी ये याद दिलाते रहेंगे कि भारतीय सिनेमा में एक ऐसा भी अभिनेता हुआ था, जिसने साधारण शकल के बावजूद अपनी असाधारण अभिनय प्रतिभा से भारतीय सिनेमा में अपना एक स्थान बनाया और सबको अपना दिवाना बनाया।

नाना की सिनेमा यात्रा मुज़फ़्फ़र अली की फिल्म 'गमन' (1978) से हुई थी लेकिन एन चंद्रा की 'अंकुश' (1985) ने नाना को स्थापित कर दिया। समांतर सिनेमा की सशक्त आवाज़ के रूप में नाना पाटेकर स्थापित हो गए और उस दौर के अन्य प्रमुख अभिनेताओं में उनकी गिनती होने लगी थी। ये

नाना के अभिनय का ही जादू था जिसने विधु विनोद चोपड़ा को नाना को अपनी फ़िल्म 'परिन्दा' में एक अहम भूमिका के लिए साइन करने पर मजबूर कर दिया। अपनी विशिष्ट अभिनय शैली से नाना ने अन्ना सेठ के इस पात्र को भारतीय सिनेमा के एक श्रेष्ठ खलनायक के रूप में स्थापित कर दिया। ये नाना ही थे जिन्होंने समांतर सिनेमा के साथ व्यवसायिक फ़िल्मों में जब हाथ आजमाया तो भी कहीं से अपने आपको हल्का नहीं होने दिया। ब्रांड नाना पाटेकर अपनी गरिमा के साथ पर्दे पर अवतरित हुआ।

नाना पाटेकर के अभिनय का विस्तार अगर देखना हो तो उनके द्वारा अभिनीत भूमिकाओं को देखने के बाद ये जान कर आश्चर्य होता है कि कैसे एक अभिनेता अपने अंदर इतने किरदार बसाए हुआ है। भारतीय सिनेमा में संजीव कुमार जी के बाद यदि अभिनय में इतनी रेंज दिखायी देती है तो वो नाना में दिखायी देती है। 'क्रांतिवीर' का प्रतापनारायण तिलक ऐसा ही एक चर्चित पात्र था जिसने आम आदमी की आवाज़ को सिनेमा के पर्दे पर प्रस्तुत किया था। मैंने निर्देशक मेहुल कुमार के एक इंटरव्यू में सुना था कि 'क्रांतिवीर' का विशेष शो देखने के बाद महान अभिनेता दिलीप कुमार ने मेहुल जी से कहा था कि नाना को बोलना ये किरदार उसके साथ हमेशा रहेगा। मेहुल जी ने ये भी बताया कि नाना को ये बात जानकर बेहद ख़ुशी हुई थी। 'क्रांतिवीर' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था।

फ़िल्म 'अग्निसाक्षी' में उनके निभाये सनकी पति के किरदार ने उन्हें शानदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया। नाना एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता और सर्वश्रेष्ठ खलनायक के फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'प्रहार-द फाइनल अटैक', 'वजूद', 'शक्ति: द पॉवर', 'अपहरण', 'अब तक छप्पन' और 'वेलकम' जैसी फिल्मों में उनके अभिनय को अलग ही विस्तार मिला है। विशेष तौर पर 'वेलकम' में उनके निभाये उदय शेट्टी के किरदार ने उन्हें हास्य में भी सिद्धहस्त कलाकार के रूप में पहचान दिलायी।

नाना ना केवल कुशल अभिनेता थे, उन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में भी अपनी क़ाबलियत का परिचय दिया। 'प्रहार-द फाइनल अटैक' उनके द्वारा निर्देशित फिल्म थी। प्रहार में उन्होंने एक ऐसे रिटायर्ड सैन्य अधिकारी की भूमिका निभाई थी जो एक भ्रष्ट सिस्टम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाता है। हालांकि नाना की निर्देशकीय यात्रा इस फ़िल्म से आगे नहीं बढ़ी।

नाना ना केवल हिंदी सिनेमा के बड़े कलाकार थे, उन्होंने अपनी मातृ भाषा मराठी के सिनेमा को भी आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। 2016 में बनी मराठी फिल्म 'नटसम्राट' में रंगमंच के महान अभिनेता गणपत रामचंद्र बेलवलकर की भूमिका को अपने अभिनय से जीवंत कर दिया। इसी के कारण आज 'नटसम्राट' मराठी की श्रेष्ठ फ़िल्मों में गिनी जाती है।

कुछ लोगों को नाना की सिनेमाई छवि और उनकी वास्तविक छवि एक जैसी ही दिखायी पड़ती है। एक गुस्सा या यूँ भी कह सकते हैं गुस्सैल नाना जो ना केवल व्यवस्था से नाराज़ है, वो खुद से भी नाराज़ है। पर्दे पर नाराज़ नाना अपने निजी जीवन में गंभीर और अपने में रहने वाले दिखायी देते थे। शायद इसी कारण लोग उनकी सिनेमाई छवि को वास्तविक मानकर उनसे दूरी बनाये रखने में अपनी भलाई समझते थे। बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात रखना उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था। लेकिन इस गंभीरता के पीछे एक ऐसा संवेदनशील व्यक्ति भी था जो व्यवस्था से सिर्फ़ नाराज़गी ही जाहिर नहीं करता था, वो अपने संसाधनों का उपयोग उस व्यवस्था को ठीक करने में भी करता था, बिना किसी नाम या प्रसिद्धि की चाह रखे। आज उनके जाने के बाद ऐसी कई बातें सामने आ रही हैं, विशेष तौर पर किसान परिवारों के लिए किए गए उनके कार्यों के बारे में जो एक गुस्सैल नाना के दूसरे चेहरे के बारे में बात कर रही हैं।

नाना अपने को मुंबई का मानते ही नहीं थे। वो कहा करते थे मैं यहाँ का नहीं हूँ। मैं यहाँ काम करने आता हूँ और काम करके चला जाता हूँ। मेरी आत्मा गाँव में बसती है। उनका अधिकांश समय अपने फ़ार्म हाउस पर स्थानीय किसानों के साथ खेती करते हुए ही बीतता था। यहाँ से होने वाली आय वो उनके साथ बांटा करते थे। उनके एक मित्र का कहना था नाना अपनी कमायी का 90% हिस्सा भलाई के कामों पर खर्च करते थे। बिना किसी प्रचार के, बिना नाम की चाह के।

राष्ट्रवादी सोच के नाना हमेशा देश और देशवासियों के लिए खड़े रहते थे। शायद जो दुख उन्होंने अपने बचपन में सहे थे, जो संघर्ष उन्होंने जीवन में किए थे, उन्होंने उनकी जड़ों को इस देश की माटी में गहरे जमाया था। शायद यही वजह थी इतना पैसा कमाने के बावजूद वो मुंबई में एक कमरे के फ्लैट में रहते थे। उनका कहना था मेरी ज़रूरते बहुत थोड़ी हैं, मेरे लिए इतना बहुत है। इसीलिए काम के बाद का वक़्त वो अपने फार्महाउस में बिताते थे।

हिंदी विवेक परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

सवाल

डॉ. संतोष झा

स्मित मच्छार के साहस पर कैसी चुप्पी!

कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी की प्रशंसा चहुं ओर हो रही है, लेकिन विपक्षियों ने क्यों इसपर चुप्पी साध ली। उनकी प्रशंसा में संकोच कैसा? किसी के साहस का सम्मान किसी विचारधारा का समर्थन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्र के प्रति सम्मान का परिचायक है।

कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी की प्रशंसा आज देश-दुनिया में हो रही है। संकट की घड़ी में गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने जिस साहस, संयम और सूझबूझ का परिचय दिया, वह हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है। विमान में सवार यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए, उन्होंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों का सामना किया, वह कर्तव्यनिष्ठा की उल्लेखनीय मिसाल है। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम ने एक असहज सवाल भी खड़ा किया है- क्या किसी भारतीय के साहस की प्रशंसा भी राजनीतिक और वैचारिक दृष्टिकोण से होगी? अपनी जान जोखिम में डालकर यात्रियों की सुरक्षा के लिए दृढ़ता से मोर्चा सभाले रहे कैप्टन मच्छार के साहस पर यदि राजनीतिक दलों और वैचारिक समूहों की ओर से अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं आती, तो उनकी संवेदनशीलता, राष्ट्रप्रेम और मानवीय दृष्टि पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

कैप्टन मच्छार की बहादुरी की प्रशंसा भारत ही नहीं, विदेशों में भी हुई। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सार्वजनिक रूप से सराहना की। प्रधान मंत्री ने वीडियो कॉल के माध्यम से कैप्टन मच्छार से बातचीत की और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद, उन्होंने दूसरों की जान बचाने के लिए अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प दिखाया। उनके प्रयासों से बड़ी त्रासदी को टालने में सहायता मिली।

भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मच्छार का साहस केवल एक विमान और उसमें सवार यात्रियों को बचाने की घटना नहीं है, बल्कि संकट की घड़ी में कर्तव्य, धैर्य और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने का उदाहरण है। उन्होंने 9/11 जैसी भयावह त्रासदी की आशंका को टालते हुए अपनी सूझबूझ और साहस से 174 यात्रियों की जिंदगी बचाई। उनके इस पराक्रम की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हुई। इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने उन्हें 'हीरो'कहा, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प समेत कई प्रमुख हस्तियों ने उनकी बहादुरी की सराहना की। गुजरात सरकार ने भी उन्हें 'विशिष्ट गुजरात गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित करने की घोषणा की। ऐसे साहस को राजनीतिक चश्मे से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गौरव और मानवीय संवेदना की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी पर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की ओर से अब तक कोई सार्वजनिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। भाजपा नेताओं ने इसे मुद्दा बनाकर कांग्रेस नेतृत्व पर सवाल उठाए हैं। हालांकि, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कैप्टन मच्छार, उनके चालक दल और अन्य लोगों के साहस को प्रशंसा किया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने भी उनके अदम्य साहस और सूझबूझ की सराहना की है।

इसी तरह, वामपंथी विचारधारा से जुड़े कुछ वर्गों की प्रतिक्रिया को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। आलोचकों का तर्क

है कि जिन लोगों के सार्वजनिक विमर्श में मानवाधिकार और नागरिक स्वतंत्रता जैसे मुद्दे प्रमुख हैं, उनसे अपेक्षा स्वाभाविक है कि वे संकट की घड़ी में असाधारण साहस दिखाने वाले नागरिक की खुले मन से प्रशंसा करें। आखिर एक बहादुर पायलट के साहस को स्वीकार करने में संकोच क्यों हो? नागरिक के साहस का मूल्यांकन उसकी विचारधारा के आधार पर नहीं होना चाहिए। यदि बहादुरी भी वैचारिक दृष्टि से देखी जाने लगे, तो यह लोकतांत्रिक विमर्श और सामाजिक संवेदना, दोनों के लिए चिंताजनक संकेत है।

यदि विमान में सवार यात्रियों की जान बचाने का यह प्रयास विफल हो जाता और आतंकी मंशा रखने वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य में सफल हो जाता, तो क्या घटना की व्याख्या भी राजनीतिक नजरिए से नहीं की जाती? क्या तब चर्चा पायलट के साहस के बजाय उसकी पहचान, धर्म और विचारधारा के इर्द-गिर्द केंद्रित नहीं हो जाती? ऐसे सवाल इसलिए उठते हैं क्योंकि देश में आतंक और हिंसा की घटनाओं पर कई बार राजनीतिक दृष्टिकोण के आधार पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिलती रही हैं।

हालांकि, कैप्टन मच्छार के मामले में राजनीति से ऊपर उठकर देखने की आवश्यकता है। उन्होंने संकट की घड़ी में अपने कर्तव्य का निर्वहन किया और यात्रियों की सुरक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डाली। उनके साहस का मूल्यांकन किसी धर्म, दल या विचारधारा के आधार पर नहीं, बल्कि उनके कर्तव्य और मानवीय साहस के आधार पर होना चाहिए। बहादुरी की पहचान यही है कि वह कठिन समय में सामने आए और बिना किसी भेदभाव के सबकी रक्षा करे।

राष्ट्रप्रेम केवल राजनीतिक नारों या विचारधाराओं तक सीमित नहीं हो सकता। वह तब भी प्रकट होता है, जब देश का कोई नागरिक अदम्य साहस दिखाता है और समाज बिना किसी पूर्वाग्रह के उसके योगदान को स्वीकार करता है। सैनिक सीमा पर डटा रहे, डॉक्टर महामारी के बीच सेवा करे या पायलट आसमान में संकट के बीच यात्रियों की जान बचाने के लिए जोखिम उठाए, ऐसे हर साहस का सम्मान होना चाहिए।

राजनीति अपनी जगह है और राष्ट्रहित अपनी जगह। लोकतंत्र में राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन किसी नागरिक के साहस को राजनीतिक दृष्टि से देखना उचित नहीं। कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी किसी दल या विचारधारा की सम्पत्ति नहीं, बल्कि देश का गौरव है।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

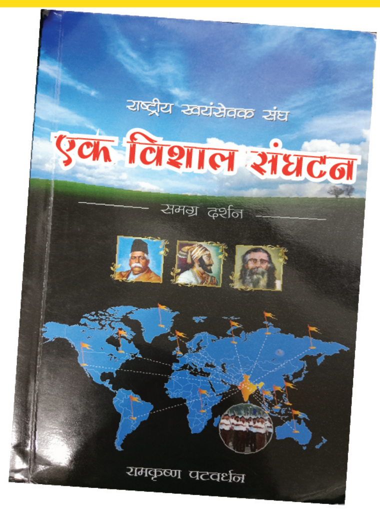

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

वर्ल्ड फूड डे (16 अक्टूबर)

रितेश कश्यप

भारत सरकार की दिसंबर 2025 की जानकारी के अनुसार, देश में 251 कृषि उत्पादों को जीआई पंजीकरण प्राप्त था। इनमें अनाज, फल, सब्जियां, मसाले और अन्य कृषि उत्पाद शामिल थे। यह संख्या बताती है कि भारत की क्षेत्रीय कृषि विविधता कितनी व्यापक है।

जीआई टैग कृषि विरासत का वैश्विक शंखनाद

भारत की मिट्टी केवल अन्न नहीं उपजाती, बल्कि हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति और परंपरा को भी अपने भीतर संजोए हुए हैं। कश्मीर के केसर से लेकर बिहार के मखाने तक, महाराष्ट्र के आम से लेकर दक्षिण भारत के विशिष्ट चावल तक, देश के हर क्षेत्र की कृषि अपनी अलग पहचान रखती है। ये उत्पाद केवल बाजार में बिकने वाली वस्तुएं नहीं, बल्कि भारतीय समाज के पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय उद्यमशीलता और प्रकृति के साथ उसके संबंध के प्रतीक हैं। इसी दिशा में भौगोलिक संकेतक यानी जीआई टैग भारतीय कृषि विरासत को कानूनी पहचान और आर्थिक अवसर प्रदान करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनती दिखाई दे रही है।

जीआई टैग उन उत्पादों को दिया जाता है जिनकी गुणवत्ता, प्रतिष्ठा या विशेषताएं किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से जुड़ी होती हैं। भारत में इसके संरक्षण के लिए भौगोलिक संकेतक वस्तु (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 लागू है।

उदाहरण के तौर पर बासमती चावल, दार्जिलिंग चाय, मिथिला मखाना, शाही लीची और कश्मीर केसर जैसे उत्पाद अपनी विशिष्ट पहचान के कारण देश की कृषि शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारत की परंपरा में धरती को माता और अन्न को जीवन का आधार माना गया है। पीढ़ियों से किसानों ने स्थानीय जलवायु, मिट्टी और प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुरूप खेती की विधियां विकसित की हैं। जीआई टैग इस विरासत को आधुनिक आर्थिक व्यवस्था से जोड़ने का अवसर दे रहा है।

भारत की मिट्टी, उत्पादों की अनूठी पहचान

भारत के लगभग हर क्षेत्र की कृषि विरासत अपने विशिष्ट उत्पादों के माध्यम से देश की आर्थिक शक्ति बन सकती है। उत्तर भारत में जम्मू-कश्मीर का केसर, हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा चाय, उत्तर प्रदेश का दशहरी आम और काला नमक चावल तथा पंजाब-हरियाणा से जुड़े निर्धारित क्षेत्रों का बासमती चावल अपनी अलग पहचान रखते हैं।

पूर्वी भारत में बिहार का मिथिला मखाना, शाही लीची, जर्दालु आम, कतरनी चावल और मर्चा धान; पश्चिम बंगाल की दार्जिलिंग चाय, गोविंदभोग चावल और तुलाइपांजी चावल; ओडिशा का कोरापुट कालाजीरा चावल और कंधमाल हल्दी तथा छत्तीसगढ़ का जीराफूल और दुबराज चावल भारतीय कृषि की

विविधता को प्रदर्शित करते हैं।

दक्षिण भारत में तमिलनाडु की ईरोड हल्दी और कंबम अंगूर, कर्नाटक का नंजनगुड रसभले केला और गुलबर्गा तूर दाल, केरल का पोक्कली चावल और वाझक्कुलम अनानास, आंध्र प्रदेश का बंगनपल्ले आम और गुंटूर सन्नम मिर्च तथा तेलंगाना की तंदूर अरहर दाल प्रमुख उदाहरण हैं।

पश्चिम भारत में महाराष्ट्र का अल्फांसो आम, नागपुर संतरा और महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी; गुजरात का गिर केसर आम और भालिया गेहूं; गोवा का काजू और मनकुराद आम तथा राजस्थान की सोजत मेहंदी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

पूर्वोत्तर भारत भी इस विरासत में महत्वपूर्ण योगदान देता है। असम का जोहा चावल, काजी नेमू और तेजपुर लीची; अरुणाचल प्रदेश का खाव ताई चावल; मणिपुर का चक-हाओ, मेघालय की लाकाडोंग हल्दी, मिजोरम की मिर्च और अदरक, नागालैंड की नागा मिर्च, त्रिपुरा का क्वीन अनानास और सिक्किम की बड़ी इलायची इस क्षेत्र की विशिष्ट कृषि संपदा के उदाहरण हैं।

इनके अतिरिक्त देश के विभिन्न राज्यों में कृषि और खाद्य श्रेणी के अनेक अन्य ञ्रख टैग प्राप्त उत्पाद हैं। यह विविधता भारत को क्षेत्रीय खाद्य उत्पादों के वैश्विक बाजार में विस्तार का अवसर प्रदान करती है।

भारतीय उद्यमिता: खेत से बाजार तक

भारत की कृषि शक्ति को आर्थिक समृद्धि में बदलने के लिए केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं था, इसीलिए किसानों को प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और विपणन से भी जोड़ने के प्रयास हो रहे हैं।

इसके लिए किसान उत्पादक संगठन, सहकारी समितियां, कृषि स्टार्टअप और छोटे उद्योग इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय उद्यमिता का उद्देश्य है कि किसान केवल कच्चे माल का उत्पादक न रहे, बल्कि मूल्यवर्धन और बाजार व्यवस्था में भी उसकी भागीदारी भी सुनिश्चित हो सके, इस दिशा में भी कदम बढ़ चुके हैं।

आत्मनिर्भर भारत और विदेशी निर्भरता में कमी

आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से कट जाना नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं के आधार पर दुनिया के साथ बराबरी से व्यापार करना है। भारत अपनी कृषि व्यवस्था में घरेलू प्रसंस्करण, भंडारण, आधुनिक तकनीक और स्थानीय उद्योगों को मजबूत करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढ़ाने का काम कर रहा है।

एक तरफ जीआई टैग प्राप्त उत्पादों के निर्यात से भारत विदेशी बाजारों में अपनी पहचान मजबूत कर रहा है। वहीं, स्थानीय उत्पादन और प्रसंस्करण क्षमता बढ़ने से कुछ क्षेत्रों में अनावश्यक आयात पर निर्भरता घटाने की संभावनाएं विकसित होती दिखाई दे रही है।

कुल मिलाकर भारतीय मिट्टी में केवल अन्न नहीं, आत्मनिर्भरता के बीज भी हैं। उन्हें पहचानने, संरक्षित करने और विश्व पटल पर स्थापित करने का काम किया जा रहा है।

उत्तर भारत

- जम्मू-कश्मीर: कश्मीर केसर।
- हिमाचल प्रदेश: कांगड़ा चाय।
- पंजाब और हरियाणा: बासमती चावल (निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र)।
- उत्तर प्रदेश: मलिहाबादी दशहरी आम, काला नमक चावल, गोविंदभोग नहीं बल्कि क्षेत्रीय चावल किस्में।

पूर्वी भारत

- बिहार: मिथिला मखाना, शाही लीची, भागलपुरी जर्दालु आम, कतरनी चावल, मर्चा धान।
- पश्चिम बंगाल: दार्जिलिंग चाय, गोविंदभोग चावल, तुलाइपंजी चावल, लक्ष्मणभोग आम।
- ओडिशा: कोरापुट कालाजीरा चावल, कंधमाल हल्दी।
- छत्तीसगढ़: जीराफूल चावल, नागरी दुबराज चावल।

दक्षिण भारत

- तमिलनाडु: ईरोड हल्दी, कंबम पनीर थ्राचई अंगूर, थूयामल्ली चावल, सिरुमलाई पहाड़ी केला।
- कर्नाटक: कूर्ग संतरा, नंजनगुड रसभले केला, अप्पेमिडी आम, गुलबर्गा तूर दाल।

पश्चिम भारत

- महाराष्ट्र: अल्फांसो आम, नागपुर संतरा, महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी।
- गुजरात: गिर केसर आम, भालिया गेहूं, कच्छ खजूर, वलसाडी चीकू।
- गोवा: गोवा काजू, मनकुराद आम, खाजे।
- राजस्थान: सोजत मेहंदी, बीकानेरी भुजिया।

पूर्वोत्तर भारत

- असम: जोहा चावल, काजी नेमू, तेजपुर लीची, चोकुवा चावल।
- अरुणाचल प्रदेश: खाव ताई चावल, आदि केकेर अदरक।
- मणिपुर: चक-हाओ (काला सुगंधित चावल)।
- मेघालय: खासी मैंडरिन, लाकाडोंग हल्दी।
- मिजोरम: मिजो मिर्च, मिजो अदरक।
- नागालैंड: नागा मिर्च, नागालैंड ट्री टोमैटो।
- त्रिपुरा: क्वीन अनानास।
- सिक्किम: बड़ी इलायची।

रंजीत कुमार

सबक

हाइब्रिड युद्ध की चुनौती

दुश्मन देश अब सैन्य, आतंकवादी, आर्थिक, साइबर और मनोवैज्ञानिक हमलों की मिली-जुली रणनीति अपनाकर प्रतिद्वंद्वी को भीतर से कमजोर करने का प्रयास करते हैं। भारत भी चीन और पाकिस्तान की ओर से इसी हाइब्रिड युद्ध सम्प्रभुता और सुरक्षा के लिए गम्भीर चुनौती बन चुका है।

हालांकि दुश्मन देश को परास्त करने के लिए उस पर सीधे सैन्य हमले का पारम्परिक तौर पर प्राचीन काल से प्रयोग किया जाता रहा है, लेकिन समय के साथ-साथ देशों ने अपने प्रतिदंद्वी देशों के क्षेत्रों पर कब्जा करने, उसे पूरी तरह अपने अधीन कर लेने और इसे पूरी तरह-तहस नहस कर देने के लिए सैन्य हमलों के समानांतर कई अन्य तरीके भी अपनाने शुरु कर दिए हैं। आज के आधुनिक काल में भारत भी अपने पड़ोसी देशों चीन व पाकिस्तान की ओर से ऐसे ही सैनिक, आतंकवादी और आर्थिक हमलों की मिश्रित रणनीति यानी हाइब्रिड युद्ध या चौतरफा घेर लेने की रणनीति का शिकार हो रहा है। जो भारत की राष्ट्रीय सम्प्रभुता और प्रादेशिक एकता के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

इन तरीकों का प्रयोग करने से दुश्मन देश को सीधा या प्रत्यक्ष तौर पर पता नहीं चलता और वह प्रमाण के साथ यह आरोप भी नहीं लगा सकता कि दुश्मन देश उसे तोड़ने-मरोड़ने के लिए किस तरह के भीतरघाती हमले कर रहा है।

दुश्मन देश द्वारा इन्हीं कई तरीकों के एक साथ प्रयोग को ही आज के युग में हाइब्रिड युद्ध की संज्ञा दी गई है। दुश्मन की कमर मरोड़नी हो तो उस पर सैनिक से लेकर गैरसैनिक हमले इस तरह किए जाएं कि न केवल इसकी सीमाओं को भेदते हुए सैनिक अंदर तक घुसते आएं बल्कि दुश्मन देश को अंदर से ही आर्थिक तौर पर खोखला कर दिया जाए कि वहां अंदरुनी विद्रोह हो जाए और वहां के शासक को खुद ही अपना सिंहासन त्यागना पड़े। इसे ही हाइब्रिड युद्ध कह सकते हैं। रूस द्वारा 2014 में यूक्रेन के क्राइमिया पर सैन्य हमले के साथ अंदरूनी विद्रोह भड़काकर उसे आत्मसमर्पण करने को

मजबूर करने की रणनीति अपनाई जाना एक ताजा मिसाल है। इसके बाद रूस ने यूक्रेन के दोनबास क्षेत्र में विद्रोह भड़काने के साथ-साथ वहां सैनिक अतिक्रमण भी कर दिया।

इसी तरह अमेरिका ने ईरान की राजधानी तेहरान पर मिसाइली हमले कर वहां के सर्वोच्च शासक को ही मौत के घाट उतार दिया ताकि अमेरिका वहां अपनी पसंद के नेता को देश की कमान सौंप कर पूरे ईरान पर अपना प्रभुत्व जमा सके।

आज के आधुनिक युग में हाइब्रिड युद्ध ने भी कई स्वरूप धारण कर लिया है, जिन्हें हम निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं।

- पारम्परिक व अनियमित सैन्य हमला व कार्रवाई
- आतंकवादी कार्रवाई के जरिए कम तीव्रता वाले युद्ध का दुश्मन के क्षेत्र में गोपनीय तरीके से संचालन
- साइबर हमला व सूचना तंत्र में भ्रम पैदा करना
- आर्थिक बहिष्कार
- भाड़े के सैनिकों के माध्यम से गुप्त अभियान
- मनोवैज्ञानिक कार्रवाई व झूठा प्रचार करके दुश्मन में अफरा-तफरी पैदा करना

जब दो प्रतिद्वंद्वी देश भारत-चीन और भारत-पाकिस्तान परमाणु हथियारों से लैस हों, तो दोनों पक्षों को पता है कि उनके बीच खुला युद्ध होने पर परस्पर विनाश सुनिश्चित है। इसलिए पाकिस्तान और चीन मिलकर भारत के खिलाफ गैर-सैन्य हमलों की मिली-जुली रणनीति लागू करते दिखते हैं।

मसलन, चीन ने भारत की अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा डालने के लिए उच्च तकनीक वाले औद्योगिक उत्पादों, जैसे रेयर अर्थ मैग्नेट, का निर्यात भारत को रोक दिया है। इसका उद्देश्य यह है कि भारत इलेक्ट्रॉनिक, रक्षा, अंतरिक्ष और वाहन जैसे आधुनिक उद्योगों में विश्व स्तर का दर्जा प्राप्त न कर सके। चीन की रणनीति है कि क्रिटिकल मिनरल्स जैसे खनिज उत्पादों के अलावा अति संवेदनशील सेमीकंडक्टर चिप्स के निर्यात पर भी नियंत्रण लगाकर भारत की अर्थव्यवस्था को ठप कर दिया जाए। इसी तरह चीन अपने उच्च तकनीक वाले उत्पादों का प्रयोग आर्थिक और व्यापारिक हथियार के रूप में भारत के खिलाफ करता है।

इसके अलावा, चीन ने इंटरनेट हैक करने वाले तकनीकी सिपाहियों की एक विशाल फौज खड़ी की है, जो अधिकतर भारत के रक्षा और उच्च तकनीक वाले औद्योगिक क्षेत्रों के सूचना तंत्र में सेंध मारकर उसका काम-काज ठप करने का प्रयास करते रहते हैं।

आज के युग में दुश्मन देशों को सैन्य हमले के साथ-सा थआर्थिक चोट पहुंचाने की रणनीति को अंजाम देने का प्रयास किया जाता है। जैसे कि हम अमेरिका व चीन के बीच मौजूदा दौर में चल रहे तकनीकी युद्ध को देख रहे हैं, जिनके जरिए दोनों देशों का प्रयास है कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से एक-दूसरे के आर्थिक-तकनीकी तंत्र को झुकने को मजबूर कर दिया जाए।

वास्तव में दुनिया की दोनों महाशक्तियां अपने पास परमाणु हथियारों का अंधाधुंध जमावड़ा तो कर रही हैं, लेकिन वे एक-दूसरे को कमजोर साबित करने या उनकी आर्थिक रीढ़ तोड़ कर पूरे देश को घुटने टेकने को मजबूर करने की

रणनीति पर चल रही हैं।

यदि हम पाकिस्तान की युद्ध रणनीति पर ध्यान दें तो देखेंगे कि वह अपने पड़ोसी देशों भारत और अफगानिस्तान के खिलाफ किस तरह की समरनीति को अंजाम दे रहा है। पिछले पांच-छह दशकों से पाकिस्तान भारत के विरुद्ध सैनिक ताकत मजबूत करने की रणनीति के साथ साथ वह आतंकवाद के जरिए भारत को भीतर से तोड़ने की रणनीति पर भी चल रहा है, जो भारत के लिए एक बड़ा सिरदर्द बना हुआ है। हालांकि भारत ने इसका समुचित सबक पाकिस्तान को सिखाना शुरु कर दिया है जैसा कि हमने पिछले साल मई महीने में ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान के 11 बड़े आतंकवादी शिविरों को तहस -नहस कर उसे एक बड़ा सबक सिखाया। इस कार्रवाई के माध्यम से भारत ने आतंकवाद के जरिए भारत को तबाह करने की पाकिस्तान की रणनीति को निष्फल कर दिया और दुनिया को दिखाया कि वह पाकिस्तान के सैन्य -आतंकवादी गठजोड़ के जरिए हाइब्रिड युद्ध को ध्वस्त की क्षमता रखता है। ●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

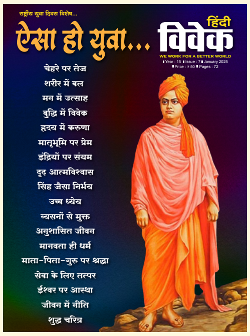

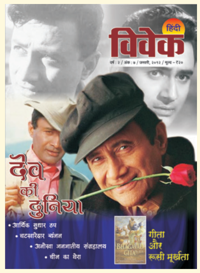

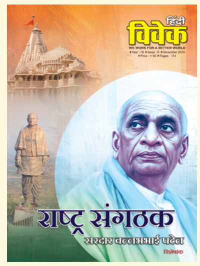

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

व्यंग्य

मुकेश जोशी

एक कचौरी दो समोसा में उलझा भरोसा

एक कचौरी, दो समोसा और मर्दों तुम्हारा क्या भरोसा! यह नारा इन दिनों खूब जोर शोर से जेन जी द्वारा चिल्ला चिल्ला कर लगाया जा रहा है। वो जेन जी की लड़कियां जो फटे कपड़ों में गाली गलौच भरे अश्लील नारे प्रधानमंत्री के खिलाफ लगाती देखी गई थी, वो अब घबराकर कचौरी समोसा जैसे शाकाहारी नारों पर उतर आई है। प्रधानमंत्री के खिलाफ गन्दी नारेबाजी अब सिर्फ मर्दों के खिलाफ ईजाद किए गए इस नारे में दबाकर रख दी गई है।

नारी द्वारा नीले ड्रम में चुनकर मार जाने वाला या पहाड़ों से धक्का देकर मार दिए जाने वाला मर्द खुद नारी के संदेह के घेरे में है। मरे भी बापड़ा मरद और भरोसे पर शक भी उसी पर। ये कहां का इंसाफ है भाई। कचौरी समोसे के इस नारे में नारी शक्ति देश के 75 करोड़ से ज्यादा मर्दों को चुनौती और चेतावनी दोनों देती नजर आ रही हैं। पवित्र नवरात्रि पर्व शुरू हो चुका है यह तो पूर्णतः शक्ति पर्व है शक्ति हमारे यहां स्त्री को ही माना गया है। ऐसे में जब नारी शक्ति ही मर्दों के भरोसे पर प्रश्नचिन्ह लगा रही है तब बेचारे मर्द अपना भरोसा लौटाने के लिए क्या करें। मर्दों का भरोसा खो चुकी इन लड़कियों को कौन समझाए या कौन इनसे पूछे कि बिना मर्दों के तुम कैसे और कहां तक जा सकोगी। असल में पहले जमाने में नारे आंदोलन खड़े करते थे, अब नारों से सिर्फ रील बनाई जा रही हैं। पहले नारे सुनकर सरकारें डरती थीं, अब नारे सुनकर मोबाइल कैमरे ऑन हो जाते हैं और कैमरा ऑन होते ही दोनों हाथ हवा में लहराते हुए एक नया नारा गूंजता है–

एक कचौरी, दो समोसा, मर्दों तुम्हारा क्या भरोसा!

अब सवाल यह है कि आखिर यह भरोसा गया कहां?

अगर किसी एक पुरुष ने किसी महिला को धोखा दिया, तो उसकी शिकायत होनी चाहिए। अगर किसी पुरुष ने गलत व्यवहार किया, तो उसके खिलाफ आवाज उठनी चाहिए और महिला पुरुष पर जुल्म करे तो जो कि आजकल खूब हो रहा है, तो मर्द किससे शिकायत करे। आजकल बराबरी की बात बहुत होती है, होनी भी चाहिए, लेकिन बराबरी का मतलब यह नहीं कि जिस पूर्वाग्रह से महिलाएं वर्षों तक परेशान रहीं, उसका नया संस्करण पुरुषों पर लागू कर दिया जाए। अगर सभी महिलाएं एक जैसी होती हैं कहना गलत है, तो सभी पुरुष एक जैसे होते हैं भी उतना ही गलत है। आखिर मर्द भी इसी समाज का हिस्सा हैं। पिता मर्द है, भाई मर्द है, बेटा मर्द है, पति मर्द है, दोस्त मर्द है और वह बुजुर्ग भी मर्द है जो शायद घर के बाहर कुर्सी पर बैठकर आज भी मोहल्ले की हर समस्या का समाधान मुफ्त में बताता है। आज अगर किसी मंच पर खड़े होकर यह कहा जा रहा है कि मर्दों का क्या भरोसा, तो तालियां बजाने से पहले यह भी सोचना चाहिए कि उसी मंच के आसपास कितने अच्छे पुरुष खड़े हैं। कितने पिता अपनी बेटियों के सपनों के लिए दिन–रात मेहनत कर रहे हैं। कितने भाई अपनी बहनों की खुशी के लिए अपनी इच्छाएं छोड़ रहे हैं। कितने पति घर की जिम्मेदारियों में बराबर का हाथ बंटा रहे हैं और कितने बेटे अपने बूढ़े माता–पिता की सेवा कर रहे हैं। क्या इन सबको भी एक ही नारे में संदिग्ध घोषित कर देना चाहिए? वैसे भरोसे की भी बड़ी अजीब कहानी है। भरोसा पुरुष या महिला देखकर नहीं किया जाता। भरोसा आदमी देखकर किया जाता है–उसके व्यवहार से, उसकी नीयत से और उसके चरित्र से। कुछ पुरुष खराब हो सकते हैं, लेकिन कुछ महिलाएं भी गलत होती हैं। इसलिए जेंडर देखकर भरोसा करना भी गलत है और जेंडर देखकर अविश्वास करना भी और रही बात जेन जी की, तो युवाओं नारे लगाइए। खूब लगाइए। दोनों हाथ हवा में लहराइए, मगर कभी–कभी दोनों हाथ नीचे करके दिमाग भी ऊपर उठा लीजिए।

गलत को गलत कहिए,

मगर पूरे इंसान को दोष मत दीजिए।

क्योंकि आखिर में बात इतनी सी है–

कचौरी गोल है, समोसा तिकोना है, लेकिन इंसान को जेंडर के खाने में बांटकर देखने वाली सोच ही सबसे ज्यादा टेढ़ी है। ●●●

अपर्णा झा

एशियाई खेल

एशियाई खेलों में भारत की यह लंबी छलांग केवल पदकों की संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक उभरती हुई वैश्विक खेल महाशक्ति के रूप में भारत के आत्मविश्वास को दर्शाती है।

शानदार प्रदर्शन और नए कीर्तिमान

एशियाई खेल (एशियन गेम्स) केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर एशियाई देशों की खेल क्षमता, अनुशासन और सांस्कृतिक एकता का महाकुंभ हैं। 1951 में नई दिल्ली से शुरू हुए इस सफर में भारत संस्थापक सदस्य के रूप में हमेशा से एक केंद्रीय स्तंभ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत ने खेल के मैदान पर एक अभूतपूर्व बदलाव देखा है। भारतीय एथलीटों ने पारंपरिक खेलों के दायरे से बाहर निकलकर वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है और पदक तालिका में शीर्ष देशों को कड़ी टक्कर दी है।

हाल के वर्षों की ऐतिहासिक उपलब्धियाँ

पिछले कुछ संस्करणों में भारत का प्रदर्शन यह साबित करता है कि भारतीय खेल अब एक नए स्वर्णिम युग में प्रवेश कर चुके हैं:

हांगझोऊ 2023 (ऐतिहासिक शतक): चीन के हांगझोऊ में आयोजित 19वें एशियाई खेलों में भारत ने इतिहास रचते हुए पहली बार 100 से अधिक पदक जीतने का रिकॉर्ड बनाया। कुल 107 पदकों (28 स्वर्ण, 38 रजत और 41 कांस्य) के साथ भारत चौथे स्थान पर रहा, जिसने देश में खेल संस्कृति की एक नई परिभाषा तय की।

आईची-नागोया 2026 (दमदार निरंतरता): जापान में संपन्न हुए 20वें एशियाई खेलों में भारत ने अपनी मजबूत लय को बरकरार रखते हुए कुल 85 पदक (21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य) जीते और वैश्विक मंच पर पुनः चौथा स्थान हासिल किया। यह प्रदर्शन दर्शाता है कि भारत की सफलता कोई तुक्का नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली वैज्ञानिक ट्रेनिंग और खिलाड़ियों के कड़े परिश्रम का परिणाम है।

भारतीय खेलों के ऐतिहासिक मील के पत्थर

तीरंदाजी में दक्षिण कोरियाई दबदबा खत्म करना: तीरंदाजी जैसे खेल में, जहाँ कभी दक्षिण कोरिया का एकछत्र

राज था, भारतीय तीरंदाजों ने न सिर्फ उन्हें मात दी बल्कि रिकर्व और कंपाउंड इवेंट्स में स्वर्ण पदक जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

महिला हॉकी में 44 साल का सूखा समाप्त: नागोया 2026 में भारतीय महिला हॉकी टीम ने इतिहास रचते हुए, फाइनल में मजबूत चीनी टीम को 1-0 से हराकर 44 साल बाद स्वर्ण पदक जीता और साथ ही लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए अपना टिकट भी पक्का किया।

पारंपरिक खेलों में बादशाहत: कबड्डी में भारतीय पुरुष और महिला दोनों टीमों ने हमेशा अपना वर्चस्व कायम रखा है। इसके अतिरिक्त, क्रिकेट के शामिल होने के बाद भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने स्वर्ण पदक जीतकर अपनी वैश्विक श्रेष्ठता साबित की है।

नवाचार और नए खेल: गोल्फ में प्रणवी उर्स ने महिला व्यक्तिगत स्पर्धा में भारत के लिए पहला ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीतकर खेल जगत को चौंका दिया।

भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय की खेल नीतियों ने देश में एक नए खेल पारिस्थितिकी तंत्र की नीवं रखी। इन सरकारी पहलों और कॉर्पोरेट समर्थनों ने एथलीटों को विश्वस्तरीय सुविधाएं दी हैं, जिससे भारतीय एथलीटों को बहुत प्रोत्साहन मिला और वे आज वैश्विक मंचों पर लगातार सफलता के झंडे गाड़ रहे हैं।

खेल मंत्रालय की प्रमुख खेल नीतियां (संक्षिप्त विवरण)

टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम

उद्देश्य: इस प्रमुख योजना की शुरुआत सितंबर 2014 में की गई थी, जिसका मुख्य लक्ष्य ओलंपिक और पैरालिंपिक खेलों में भारत के लिए पदक जीतने वाले संभावित खिलाड़ियों की पहचान करना और उन्हें तराशना है।

सहायता: इसके तहत खिलाड़ियों को विश्व स्तरीय विदेशी प्रशिक्षण, अत्याधुनिक खेल उपकरण, अंतरराष्ट्रीय स्तर के कोच और 50,000 मासिक वजीफा (कोर ग्रुप को) प्रदान किया जाता है।

विस्तार (जूनियर TOPS): भविष्य की प्रतिभाओं (लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक) को तैयार करने के लिए वर्ष 2020 में जूनियर TOPS (डेवलपमेंट ग्रुप) की शुरुआत हुई, जिसमें 25,000 मासिक भत्ता दिया जाता है।

खेलो इंडिया कार्यक्रम

वर्ष 2018 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य जमीनी स्तर पर खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करना है। इसके तहत देश भर से चुनी गई प्रतिभाओं को 8 वर्षों तक प्रतिवर्ष 5 लाख की वित्तीय सहायता दी जाती है।

नीरू धांडा का एशियाई रिकॉर्ड और ध्वजवाहक सम्मान

उपलब्धि: निशानेबाज नीरू धांडा ने महिला व्यक्तिगत ट्रैप शूटिंग में 28/30 के रिकॉर्ड स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता।

रिकॉर्ड: उन्होंने एशियाई खेल ट्रैप स्पर्धा का नया एशियाई रिकॉर्ड कायम किया। शानदार प्रदर्शन के कारण उन्हें समापन समारोह में भारत की ध्वजवाहक बनने का गौरव मिला।

टीम खेलों का एकमुश्त कब्जा (Clean Sweep)

उपलब्धि: भारत ने क्रिकेट, कबड्डी और हॉकी तीनों प्रमुख टीम खेलों के पुरुष और महिला दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक जीते।

रिकॉर्ड: भारत ने क्रिकेट (पुरुष/महिला), कबड्डी (पुरुष/महिला), और हॉकी (पुरुष/महिला) की सभी 6 की 6 स्वर्ण पदक स्पर्धाओं पर एकमुश्त कब्जा जमाकर अभूतपूर्व दबदबा कायम किया।

वैश्विक स्तर पर भारत का बदलता दृष्टिकोण

अतीत में भारत को केवल कुछ चुनिंदा खेलों जैसे कुश्ती, मुक्केबाजी या कबड्डी तक सीमित माना जाता था। पर आज का भारत एथलेटिक्स, बैडमिंटन, गोल्फ, तीरंदाजी, स्क्वैश और नौकायन (रोइंग) जैसे खेलों में भी पदक जीत रहा है।

आज का भारतीय एथलीट किसी भी खेल मंच पर अपने प्रतिद्वंदी देशों के सामने निडर होकर उतरता है और तिरंगे का सम्मान बढ़ाता है। एशियाई खेलों के इतिहास में हाल के वर्षों में भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा एवं श्रमसाध्य लगन से वैश्विक स्तर पर भारत के खेल मानचित्र को स्वर्णिम कर दिया।

●●●

दो मुंह सांप का रेस्क्य

'प्रकृति मित्र मंडल, दाहोद' की रेस्क्यू टीम ने वन विभाग के सहयोग से दो स्वतंत्र मुंह वाले बेहद दुर्लभ वुल्फ स्नेक का सफलतापूर्वक रेस्क्यू किया है। विदित हो कि यह रेस्क्यू संस्था के स्थापना दिवस यानी 4 अक्टूबर को किया गया। रेस्क्य टीम ने सांप को सुरक्षित तरीके से एक बर्तन में रखकर रेस्क्यू किया। विशेषज्ञों वुल्फ स्नेक के रूप में इसकी पहचान की जो गैर-विषैला प्रजाति का है।

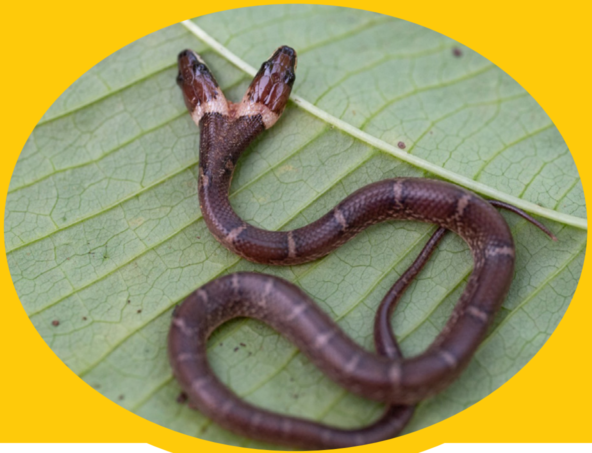

ये मछली लगाती है लिपस्टिक

रेड-लिप्ड बैटफिश का सिर चमगादड़ जैसा चौड़ा होता है, इसलिए नाम बैटफिश पड़ा। गालापागोस द्वीपों और पूर्वी प्रशांत महासागर में 20-40 मीटर गहराई में रहती है। सबसे विशेष बात- ये तैरती नहीं, चलती है। मजबूत फिन पैरों की तरह काम करते हैं, जिससे ऊर्जा बचती है। लाल होंठ प्रजनन और संचार के लिए हैं। कम रोशनी में साथी को लुभाने में सहायताकरते हैं, और सोशल मीडिया पर वायरल भी बनाते हैं। सिर पर इलिसियम नाम का छोटा अंग होता है, जिस पर चारा लगा रहता है। इससे छोटी मछलियों को फंसाकर झपट लेती है।

सहारा की रहस्यमयी आंख की संरचना

मॉरिटानिया के सहारा रेगिस्तान में एक विशाल गोलाकार चट्टानी संरचना मौजूद है, जिसे रिचाट स्ट्रक्चर या आई ऑफ द सहारा कहा जाता है। करीब 40 किमी में स्थित यह ढांचा अंतरिक्ष से भी दिखाई देता है और अंतरिक्ष यात्री इसे लैंडमार्क के रूप में इस्तेमाल कर चुके हैं। इसकी ज्वालामुखी परतें लाखों पूर्वी देशों में हवा और पानी के कारण कटाव से बनी हैं। शुरु-आत में वैज्ञानिकों ने इसे उल्कापिंड प्रभाव से नुकसान माना था, लेकिन चट्टानों में इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला।

राष्ट्रीय अधिवेशन उत्साहपूर्वक सम्पन्न

कोल्हापुर। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन कोल्हापुर के समीप स्थित सिद्धगिरी कणेरी मठ में विगत 3 एवं 4 अक्टूबर को उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 550 पूर्व सैनिक एवं उनके परिवारजनों ने इस अधिवेशन में सहभागिता की।

अधिवेशन का उद्घाटन सिद्धगिरी कणेरी मठ के मठाधिपति पूजनीय श्री अदृश्य काडसिद्धेश्वर महाराज की उपस्थिति में हुआ। वंदे मातरम् एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर महाराज ने अपने आशीर्वचन में राष्ट्रीय सुरक्षा में सैनिकों के योगदान की सराहना की। साथ ही बदलती वैश्विक एवं भू-राजनीतिक परिस्थितियों तथा सैनिकों के सामने उत्पन्न हो रही नई चुनौतियों पर भी मार्गदर्शन किया। परिषद के महाराष्ट्र एवं गोवा राज्य अध्यक्ष एयर मार्शल प्रदीप बापट के सम्बोधन के बाद पूर्व सैनिकों से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। सीएसडी एवं डीआईएवी के अधिकारियों ने उपस्थित पूर्व सैनिकों का मार्गदर्शन किया तथा उनकी विभिन्न शंकाओं का समाधान किया। इन्फैंट्री स्कूल, बेलगावी के डिप्टी कमांडेंट ब्रिगेडियर मराठे ने भी उपस्थितों को मार्गदर्शन दिया।

देश के विभिन्न राज्यों के अध्यक्षों ने अपने-अपने राज्यों में परिषद द्वारा किए जा रहे कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। परिषद के सदस्य ग्रुप कैप्टन तरुण सिंघा के मार्गदर्शन में तैयार हो रही परमवीर चक्र विजेता शहीद अल्बर्ट एक्का के जीवन पर आधारित फिल्म का टीजर भी इस अवसर पर पूर्व सैनिकों को दिखाया गया।

सायंकालीन सत्र में कणेरी मठ के गुरुकुल के विद्यार्थियों ने संगीत, शारीरिक कौशल एवं विभिन्न कलागुणों का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए उपस्थित सभी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दूसरे दिन परिषद की राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं की समीक्षा की गई तथा सभी सदस्यों को उनके बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर परिषद की महाराष्ट्र एवं गोवा राज्य की आधिकारिक वेबसाइट का भी अनावरण किया गया। इस दौरान अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. चतुर्वे दी को अगले तीन वर्षों के लिए पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

अग्निवीरों के लिए 10 प्रतिशत समानांतर आरक्षण का निर्णय

समापन सत्र में महाराष्ट्र के पूर्व सैनिक कल्याण मंत्री शंभूराज देसाई विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रस्तावित सैन्य मॉल, वॉर मेमोरियल तथा पूर्व सैनिकों के लिए विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपस्थितों को दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. चतुर्वेदी ने अपने समापन भाषण में अधिवेशन के दौरान हुए कार्यों की समीक्षा प्रस्तुत की तथा परिषद के आगामी कार्यों के लिए मार्गदर्शन किया।

परिषद के मार्गदर्शक एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सहप्रचार प्रमुख प्रदीप जी जोशी ने भी उपस्थितों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. चतुर्वेदी एवं प्रदीप जी जोशी ने सैन्य मातृशक्ति के साथ विशेष संवाद किया। जिजाऊ माता की प्रेरणा से मातृशक्ति के राष्ट्रनिर्माण में योगदान को रेखांकित किया गया। राष्ट्रगान के साथ दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन हुआ।

इस अवसर पर अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के महाराष्ट्र अध्यक्ष एयर मार्शल प्रदीप बापट, उपाध्यक्ष एयर वाइस मार्शल नितीन वैद्य, ब्रिगेडियर अजित श्रीवास्तव सहित परिषद के विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित रहे। इस भव्य अधिवेशन के आयोजन में स्थानीय पदाधिकारी कर्नल सुळकुडे, नायक आण्णासाहेब कुंभार तथा कोल्हापुर पूर्व सैनिक टीम ने विशेष परिश्रम किए। साथ ही कणेरी मठ के सीईओ एवं सभी पदाधिकारियों का भी आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

Build MORE THAN A HOUSE

Build trust, security, and belonging with

TJSB Housing Loan

up to ₹3 CR.

Attractive Rate of Interest

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204